फ़रवरी, 2024, वर्ष : 45 अंक : 02

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

तिब्बत समर्थक समूहों का नौवां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन।

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

फ़रवरी, 2024, वर्ष : 45 अंक : 02

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

सेंट जोसेफ विश्वविद्यालय मे सिक्योंग पेन्पा छेरिंग।

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
ताशी देकि

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- परम पावन दलाई लामा ने तिब्बती नववर्ष 'लोसार' पर तिब्बतियों को शुभकामनाएं दीं — 1
- वारविक अर्थशास्त्र शिखर सम्मेलन- २०२४ में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने 'तिब्बत : मूल्य-आधारित मुक्ति साधना की चुनौतियां' पर मुख्य भाषण दिया — 2
- सिक्योंग ने बेंगलुरु में माउंट कार्मेल कॉलेज के छात्रों को संबोधित किया, पूर्व विदेश सचिव श्रीमती निरुपमा राव से मुलाकात की। — 3
- सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने सेंट जोसेफ विश्वविद्यालय का दौरा किया — 4
- चीन ने डैम परियोजना का विरोध कर रहे १००० से अधिक तिब्बतियों को गिरफ्तार किया सूत्रों का कहना है कि गिरफ्तार लोगों को अपना बिस्तर और भोजन लाने के लिए कहा जाता है, जिससे पता चलता है कि उन्हें जल्द रिहा नहीं किया जाएगा। — 5
- निर्वासित तिब्बतियों की किताबें प्रकाशित करने के आरोप में तिब्बती भिक्षु गिरफ्तार दो सूत्रों ने आरएफए को बताया कि कीर्ति मठ के पूर्व लाइब्रेरियन लोबसांग थाबखे को अज्ञात स्थान पर रखा गया है। — 6
- चीन ने तिब्बती नव वर्ष के मौके पर भिक्षुओं से दलाई लामा को 'बेनकाब और निंदा' करने को कहा अधिकारियों ने प्रतिष्ठित बौद्ध भिक्षुओं से 'मातृभूमि की एकता' की रक्षा करने का आह्वान किया। — 7
- तिब्बत समर्थक समूहों का नौवां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न — 8

समाचार -

- प्रेस विज्ञप्ति: अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने द्विदलीय समर्थन से तिब्बत समाधान अधिनियम पारित किया — 9
- डिप्टी स्पीकर ने तिब्बती आत्मदाह पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया — 10
- तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री से भेंट की — 11
- तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल का गोवा में एडवोकेसी अभियान संपन्न — 12
- प्रतिनिधि नामग्याल चोएड्रुप ने चेक दूतावास के लंच में भाग लिया — 13
- जापान में तिब्बत समर्थक समूहों की वार्षिक बैठक आयोजित — 14
- तिब्बती पुनर्वास परियोजना के प्रणेता कांग्रेसमैन बार्नी फ्रैंक लोसार उत्सव में सम्मानित — 15
- कैलाश शिखर के पास चीन नया बॉर्डर गेम खेल रहा! — 16

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email:
coordinator@indiatibet.net

अपनी बात

◆ लोकसभा चुनाव में राजनीतिक दलों से तिब्बत नीति स्पष्ट करने की मांग

आगामी लोकसभा चुनाव, 2024 के समय भारतीय राजनीतिक दलों को अपने घोषणा पत्रों में अपनी तिब्बत संबंधी नीति की स्पष्ट घोषणा करनी चाहिये। वे बतायें कि तिब्बत समस्या का समाधान भारत के राष्ट्रीय हित में है। सभी राजनीतिक दल और उनके नेता इसी विचार के हैं। विपक्ष में होने पर वे खुलेआम इस विचार का प्रचार-प्रसार करते हैं। वे ही सरकार में होने पर चुप्पी साध लेते हैं। तिब्बत से अधिक चीन को महत्व देने लगते हैं। भारत-चीन संबंध मजबूत हों, अच्छी बात है। तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाईलामा और निर्वासित तिब्बत सरकार भी इसके पक्ष में हैं। साथ ही वे यह भी बताते हैं कि तिब्बत संकट के होते भारत एवं चीन के संबंध विष्वसनीय नहीं हो सकते। उपनिवेषवादी, विस्तारवादी तथा साम्राज्यवादी चीन सरकार साम्यवादी है। साम्यवादी चीन के साथ भारतीय प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने शांति के प्रतीक सफेद कबूतर उड़ाये थे तथा हिन्दी चीनी भाई-भाई के गीत गाये थे। उन्होंने पंचषील समझौते को परस्पर विष्वास का प्रमाण बताया था। लेकिन ये समस्त प्रयास और प्रमाण चीनी साजिष के षिकार हो गये। वर्ष 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण के समय सफेद कबूतर, पंचषील और हिन्दी चीनी भाई-भाई के नारे भारत के काम नहीं आये। चीन ने बहुत बड़े भारतीय भूभाग को भी हथिया लिया।

साम्यवादी चीन ने स्वतंत्र देष तिब्बत पर सन् 1959 में पूरी तरह अवैध नियन्त्रण कर लिया। ऐसा उसने दस वर्षों में किया। भारतीय विचारक और राजनेता इसी से सावधान कर रहे थे। उनका कहना था कि भारत सरकार तिब्बत में चीनी हस्तक्षेप का विरोध करे। स्वतंत्र तिब्बत देष भारत का विष्वसनीय पड़ोसी है। इसे बचाना भारत का कर्तव्य है। तिब्बत पर अवैध नियन्त्रण से भारत को दीर्घकालिक नुकसान होगा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल, जयप्रकाष नारायण, डॉ. राममनोहर लोहिया, डॉ. अंबेडकर, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय सहित विभिन्न राजनेताओं की बातें जवाहरलाल नेहरू को उस समय प्रभावित नहीं कर पाईं। उन्हें सन् 1962 में चीन के हाथों भारत की पराजय के बाद ये बाते समझ आईं।

अच्छी बात है कि भारतीय जनता प्रारम्भ से तिब्बती संघर्ष के साथ है। नेहरू सरकार ने एक काम अच्छा किया था कि उसने सन् 1959 में चीनी विरोध के बावजूद दलाईलामा को उनके हजारों अनुयायियों के साथ भारत में शरण दे दी। तिब्बती समुदाय इस भारतीय सहयोग-समर्थन के लिये सदैव भारत के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। भारत की केन्द्रीय सरकार तथा प्रादेषिक सरकारों का तिब्बतियों के प्रति रचनात्मक सहयोग प्रषंसनीय है।

भारत के विभिन्न प्रदेषों में तिब्बती समुदाय कई प्रकार के उपयोगी व्यवसाय चला रहा है। तिब्बती लोग भारतीयों के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं।

तिब्बती और भारतीय समाज परस्पर सुख-दुख में भागीदार हैं। इसका कारण है भारत स्थित तिब्बत समर्थक संगठनों की सक्रियता। इसमें विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं से जुड़े संगठन शामिल हैं। समाजवादी, गांधीवादी, राष्ट्रवादी, यहाँ तक कि कई साम्यवादी भी। यह है तिब्बत संबंधी वैचारिक एकता और निरंतरता का उदाहरण। कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज के निर्देषन एवं समन्वय में कार्यरत भारतीय संगठन भारत की शांति, सुरक्षा, समृद्धि और स्वाभिमान की चीन से सुरक्षा के लिये तिब्बत समस्या का समाधान जरूरी मानते हैं। इसी सोच के साथ भारत तिब्बत संघ, भारत तिब्बत सहयोग मंच, भारत तिब्बत मैत्री संघ तथा हिमालय परिवार की संघर्षपूर्ण सक्रियता जारी है। हिमालयन कॅमिटी फॉर एक्षन ऑन तिब्बत (हिमकैट), अंतरराष्ट्रीय भारत तिब्बत सहयोग समिति, नेषनल कैम्पेन फॉर फ्री तिब्बत सपोर्ट एवं तिब्बत संबंधी भारतीय सर्वदलीय संसदीय मंच आदि कई संगठन इसी दिषा में कार्यरत हैं। ये समस्त संगठन भारतीय चिंतकों के सन् 1949 से 1959 के चिंतन को ही प्रचारित-प्रसारित-प्रकाषित कर रहे हैं। इसमें नयापन के नाम पर भारत विरोधी चीनी गतिविधियों के उदाहरण शामिल हो जाते हैं। तिब्बत में जारी क्रूरतापूर्ण चीनी नीति को उजागर किया जाता है। तिब्बती संघर्ष को मिल रहे अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं समर्थन को और बढ़ाने तथा विष्वजनमत अधिकाधिक सषक्त करने की कोषिष की जाती है।

तिब्बत समर्थक भारतीय संगठन दलाईलामा को भारत रत्न देने की मांग कर रहे हैं। दलाईलामा शांति-अहिंसा के पुजारी हैं तथा विष्वभर में प्राचीन भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित कर रहे हैं। वे भारत को तिब्बतियों का दूसरा घर कहते हैं। वे भारत को गुरु तथा तिब्बत को चेला कहते हैं, क्योंकि बौद्धदर्षन भारत से ही तिब्बत पहुँचा था। शांति नोबेल पुरस्कार समेत अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सम्मान-पुरस्कार प्राप्त दलाईलामा विभिन्न देषों की संसद संबोधित कर चुके हैं। लोकसभा चुनाव संबंधी अपने घोषणा पत्रों में राजनीतिक दल इन विषयों को भी स्थान दें। भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की राष्ट्रीय शक्ति में निरंतर विकास जारी है। भारत को अधिकाधिक शक्तिषाली बनाकर ही भारत की शांति, सुरक्षा, समृद्धि एवं स्वाभिमान को संरक्षित-संवर्धित किया जा सकता है। तभी चीन के साथ वार्ता में भारत सरकार तिब्बत विषय को पूरी गंभीरता से उठा सकेगी।

लोकसभा चुनाव के समय चीन सरकार के पास संदेष पहुँचना चाहिये कि भारत के राजनीतिक दल तिब्बती संघर्ष के साथ हैं। चीन सरकार भारत विरोधी गतिविधियों तथा तिब्बत में मानवाधिकारों का अतिक्रमण बंद करे। भारतीय मीडिया की इस मामले में सराहनीय भूमिका भविष्य में भी जारी रहेगी, ऐसी आषा की जानी चाहिये। भारतीय मीडिया को चीनी षड्यंत्र से बचकर रहना होगा।

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)

मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ परम पावन दलाई लामा ने तिब्बती नववर्ष 'लोसार' पर तिब्बतियों को शुभकामनाएं दीं

tibet.net, १० फरवरी, २०२४

धर्मशाला। तिब्बत के सर्वोच्च आध्यात्मिक धर्मगुरु परम पावन दलाई लामा ने पारंपरिक तिब्बती नववर्ष 'लोसर २१५१- वुड-ड्रैगन वर्ष' के अवसर पर तिब्बत में रहनेवाले तिब्बतियों और निर्वासित तिब्बतियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

परम पावन दलाई लामा का तिब्बतियों को लोसार पर संदेश :

मैं तिब्बत के अंदर और निर्वासन में रहने वाले अपने सभी तिब्बती भाई-बहनों को इस लोसार पर नववर्ष की शुभकामनाएं देता हूं और ताशी देलेक कहना चाहता हूं!

निर्वासन में अनेक कठिनाइयों से गुजरने के बावजूद और दमनकारी कम्युनिस्ट चीनी शासन के तहत तिब्बत के अंदर के हमारे लोग मेरे नेता रहते सुरक्षित रहे हैं। निर्वासन में अनेक कठिनाइयों से गुजरने के बावजूद और तिब्बत के अंदर दमनकारी कम्युनिस्ट चीनी शासन के तहत रहने के बावजूद हमारे लोगों की आस्था और आकांक्षा मेरे नेता रहते कम नहीं हुई हैं।

हालांकि कम्युनिस्ट चीनी शासकों की '(तथाकथित) शांतिपूर्ण मुक्ति' इच्छा रही है कि हम तिब्बती अपने धार्मिक विश्वास को भूल जाएं। लेकिन हमने अपने विश्वासों और अपनी संस्कृति को और भी मजबूती से पकड़ रखा है- यह बहुत अच्छी बात रही है। आज न केवल तिब्बतियों, बल्कि कुछ चीनियों के बीच भी बौद्ध धर्म में नए सिरे से रुचि बढ़ी है। आज जब हम बारीकी से विचार करते हैं तो पता चलता है कि दुनिया के कई हिस्सों में तिब्बती आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को तार्किक, तर्कसंगत और व्यावहारिक लाभ के तौर पर लिया जाता है क्योंकि तिब्बती आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा हमें अपने दिमाग को सकारात्मक तरीके से बदलने और आंतरिक शांति लाने में सक्षम बनाती हैं।

आजकल पश्चिमी देशों में बड़ी संख्या में लोग तिब्बती संस्कृति और अध्यात्म में रुचि ले रहे हैं। मैं उन पश्चिमी वैज्ञानिकों की बढ़ती संख्या से भी अवगत हूं जो हमारी संस्कृति में पाए जाने वाले सुहृदय बनाने के तरीकों की प्रशंसा करते हैं, हालांकि वे किसी धर्म में आस्था और विश्वास नहीं रखते हैं।

कम्युनिस्ट चीनियों ने हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को व्यवस्थित रूप से ख़त्म करने का प्रयास किया है। हालांकि, यह स्पष्ट हो गया है कि आज दुनिया में हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को नष्ट करने के बजाय उनमें नए सिरे से रुचि पैदा हो रही है।

दयालुता की हमारी यह परंपरा, जिनमें कीड़ों और अन्य छोटे प्राणियों के प्रति भी दयालु होने की बात सिखाई जाती है, हमारे यहां पीढ़ियों से चली आ रही है। दुनिया भर के लोग पहले तिब्बती बौद्ध धर्म पर बहुत कम ध्यान देते थे, लेकिन अब सदाशयता और नैतिकता की हमारी संस्कृति में रुचि ले रहे हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम तिब्बती अपनी संस्कृति और सभ्यता को दुनिया के अनमोल खजानों में से एक मानकर उसकी देखभाल करें।

जहां तक मेरी बात है, मेरा जन्म उत्तर-पूर्वी तिब्बत के सिलिंग में हुआ था। जब मैं छोटा था तो ल्हासा चला गया। सुहृदय विकसित करने की तिब्बती प्रथा हमारी तिब्बती बौद्ध परंपरा के मूल में निहित है, जिसमें बुद्ध

के उपदेशों की उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली बौद्ध शिक्षाएं शामिल हैं और उसे हमने संरक्षित किया है। थाईलैंड और बर्मा जैसे बौद्ध देश उत्कृष्ट बौद्ध प्रथाओं को संरक्षित करते हैं। लेकिन केवल तिब्बती और मंगोलियाई ही धर्म के गहन अध्ययन में संलग्न हैं। हालांकि मंगोलिया में भी इसमें बहुत गिरावट आई है।

तिब्बत की सभ्य संस्कृति सार्वभौमिक खजाने की तरह है। आपको इसे कायम रखना चाहिए। मेरा मानना है कि दुनिया भर में लोग प्रेरणा के लिए तेजी से हमारी संस्कृति और धर्म की ओर देख रहे हैं। ऐसा इसलिए नहीं कि इसमें प्रार्थनाएं और प्रसाद चढ़ाना, साष्टांग प्रणाम करना आदि अनुष्ठान शामिल हैं। बल्कि इसलिए कि यह मन को विकसित करने से संबंधित है। यह बताता है कि प्रेम और करुणा की भावना को कैसे बढ़ाया जाए। मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम दुनिया भर के लोगों के लिए उदाहरण स्थापित करने के लिए इन तरीकों को स्वयं लागू करें।

तिब्बतियों को आम तौर पर दयालु लोगों के रूप में पहचाना जाता है। लेकिन हमारा जन्म अलग तरीके से नहीं हुआ है, हम अन्य इंसानों की तरह ही हैं। हालांकि, हमें बचपन से ही दयालु हृदय रखने और सुक्ष्म प्राणियों के प्रति भी दया और करुणा जैसी अच्छी आदतों का पालन करने का संस्कार दिया गया है। हमें इसे जारी रखना चाहिए और दुनिया भर के लोगों तक अपनी करुणा बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए, चाहे वे धर्म में विश्वास करते हों या नहीं।

मैं आपसे इसे ध्यान में रखने और इसके लिए प्रयास करने का आग्रह करता हूं।

बौद्ध परंपराओं के भीतर तिब्बती बौद्ध धर्म ही बौद्ध मनोविज्ञान की सबसे गहरी समझ प्रस्तुत करता है। सेरा और डेपुंग जैसे तिब्बत के महान मठ विश्वविद्यालयों में अध्ययन किए गए शास्त्रीय ग्रंथ मन और भावनाओं के कामकाज की गहन समझ प्रस्तुत करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस समझ में व्यावहारिक तरीकों से मानसिक समस्याओं से निपटने के तरीके शामिल हैं, इसलिए यह इतना मूल्यवान है। हमने न केवल स्पष्टीकरण के शब्दों को बल्कि अध्ययन और साधना के संयोजन के माध्यम से उन्हें लागू करने के तरीकों को भी संरक्षित किया है।

हम तिब्बतियों ने अध्ययन और चिंतन का संयुक्त अभ्यास करके सौहार्द को विकसित करने की परंपरा को संरक्षित किया हुआ है। यह परंपरा अब दुनिया भर की रुचि आकर्षित कर रही है। इसलिए, हम तिब्बतियों को साहस और दृढ़ संकल्प के साथ इसे बनाए रखने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए।

मैं तिब्बत के अंदर अपने तिब्बती अनुयायियों की अटूट आस्था और भक्ति के लिए उनकी विशेष रूप से सराहना करना चाहता हूं। मुझे यह महत्वपूर्ण बात लगती है कि तिब्बतियों की नई पीढ़ी को उन अच्छे रीति-रिवाजों की गहरी समझ होनी चाहिए, जिन्हें हमने एक हजार वर्षों से अधिक समय से कायम रखा है। उन्हें यह समझ सिर्फ इसलिए नहीं हों कि वे हमारे रीति-रिवाज हैं, बल्कि इसलिए भी होने चाहिए कि वे तर्क के अनुरूप हैं। मुझे लगता है कि आज की दुनिया में यह आवश्यक है कि नई पीढ़ी उन परंपराओं पर नए सिरे से विचार करे, जिन्हें हमने पश्चिमी वैज्ञानिक रुचि के आलोक में संरक्षित किया है। उन्हें यह समझने की आवश्यकता है कि पश्चिम में धर्म में कोई विशेष आस्था न रखने वाले लोग भी हमारी परंपराओं में रुचि क्यों लेते हैं। उन्हें तिब्बत के सदियों पुराने पोषित खजाने के मूल्य को पहचानने की योग्यता हासिल करने की आवश्यकता है ताकि उस पोषित खजाने को अच्छी तरह से संरक्षित किया जा सके।

हम सभी विश्व शांति की आशा व्यक्त करते हुए बात करते हैं। लेकिन हमें अपने मन में शांति विकसित करनी होगी, यह केवल हथियारों की अनुपस्थिति के बारे में नहीं है। गर्मजोशीपूर्ण सुहृदय विकसित करने की तिब्बती प्रथा मन की शांति प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन है। कृपया इसे जारी रखें।

◆ वारविक अर्थशास्त्र शिखर सम्मेलन- २०२४ में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने 'तिब्बत : मूल्य-आधारित मुक्ति साधना की चुनौतियां' पर मुख्य भाषण दिया

tibet.net, ०४ फरवरी २०२४

लंदन। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग फिनलैंड, एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया की अपनी पहली सफल यात्रा के बाद ०१ फरवरी २०२४ को लंदन पहुंचे। यहां लंदन सिटी हवाई अड्डे के आसपास रहने वाले तिब्बती समुदाय के सदस्यों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।

ब्रिटेन और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिब्बत-चीन संघर्ष समाधान के एजेंडे को आगे बढ़ाने के बारे में सिक्योंग ने समर्थकों और विशेषज्ञों के साथ ०२ फरवरी को बंद कमरे में दो बैठकें कीं। शाम को सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने ब्रिटेन में तिब्बत से संबंधित उन एडवोकेसी

संगठनों से मुलाकात की, जो तिब्बती मुद्दे को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की एजेंसियों के साथ काम करते हैं। इसमें ब्रिटेन में तिब्बती समुदाय के परिषद सदस्य और यूके वी-टीएजी शामिल हैं।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने ०३ फरवरी को वारविक विश्वविद्यालय में वारविक अर्थशास्त्र शिखर सम्मेलन में अतिथि के रूप में भाग लिया। उनका पहला कार्यक्रम तिब्बतियों के साथ रहा। इनमें से अधिकांश मैनचेस्टर, बर्मिंघम, लीड्स और विरल में रहते हैं और कुछ लंदन से आए थे। १६वें कशाग के दृष्टि- पत्र की प्रतियां तिब्बतियों को वितरित की गईं और उन्हें अपने निर्वाचित राजनीतिक नेता से सीधे प्रश्न पूछने का अवसर दिया गया। लंदन स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि सोनम फ्रैंसी ने बैठक की अध्यक्षता की।

दोपहर के भोजन के दौरान सिक्योंग को वारविक इकोनॉमिक्स समिट (डब्ल्यूईएस)- २०२४ के अन्य वक्ताओं के साथ मिलने और बातचीत करने का अवसर मिला। दोपहर के भोजन के बाद डब्ल्यूईएस के जोसेफ ब्रेनन की अध्यक्षता में वारविक विश्वविद्यालय के चुनिंदा छात्रों के समूह के साथ एक छोटी बैठक हुई। ऐसा लगता है कि उन्होंने पिछले हफ्ते सिक्योंग की बाल्टिक देशों की यात्रा और सीटीए के बारे में जानकारी उनके द्वारा उठाए गए सवालों से ही प्राप्त कर ली थी। दिन के कई कार्यक्रमों के बाद अंतिम कार्यक्रम डब्ल्यूईएस में मुख्य भाषण देना था। मुख्य भाषण के दौरान सभागार में ४०० से अधिक लोग उपस्थित थे। 'तिब्बत: मूल्य-आधारित स्वतंत्रता आंदोलन की चुनौतियां' विषय पर सिक्योंग ने चीन की कम्युनिस्ट सरकार द्वारा अंतरराष्ट्रीय कानून के उल्लंघन का विरोध करने के लिए तिब्बती परंपरा में निहित शांति, सम्मान और करुणा के मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डाला। दर्शकों में कई चीनी छात्र भी शामिल थे। इसलिए तिब्बती नेतृत्व ने इस अवसर को शांति और सुलह (मध्यम-मार्ग दृष्टिकोण) के तिब्बती संदेश को चीनी लोगों तक पहुंचाने के तौर पर इस्तेमाल किया। सिक्योंग पेन्पा छेरिंग वारविक अर्थशास्त्र शिखर सम्मेलन में बोलने वाले पहले तिब्बती नेता थे और उनकी यात्रा और भाषण का वारविक विश्वविद्यालय समुदाय ने गर्मजोशी से स्वागत किया। बातचीत के बाद बड़ी संख्या में श्रोताओं ने सिक्योंग के साथ चर्चा करने और तस्वीरें लेने में रुचि दिखाई। सिक्योंग की फिनलैंड, एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया और ब्रिटेन की यात्रा तिब्बत कार्यालय, लंदन द्वारा आयोजित की गई थी। इस पूरी आधिकारिक यात्रा के दौरान केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के निर्वाचित नेता के साथ तिब्बत कार्यालय, लंदन के प्रतिनिधि सोनम फ्रैसी और सचिव लोचो सैमटेन भी थे।

◆ सिक्योंग ने बेंगलुरु में माउंट कार्मेल कॉलेज के छात्रों को संबोधित किया, पूर्व विदेश सचिव श्रीमती निरुपमा राव से मुलाकात की।

tibet.net, ०७ फरवरी २०२४

बेंगलुरु। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग बाल्टिक क्षेत्र के देशों- एस्टोनिया, लाटिविया, लिथुआनिया के अलावा फिनलैंड, ब्रिटेन और बेल्जियम की अपनी सफल यात्रा के बाद ०६ फरवरी २०२४ की सुबह बेंगलुरु हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतरे। हवाई अड्डे पर दक्षिण क्षेत्र के मुख्य कार्यालय प्रतिनिधि (सीटीए) के कर्मचारियों द्वारा सिक्योंग का स्वागत किया गया।

अपने आधिकारिक कार्यक्रमों के क्रम में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने बेंगलुरु के आईटीएफएस सदस्यों के साथ माउंट कार्मेल कॉलेज का दौरा किया और वहां के छात्रों को संबोधित किया। बातचीत सत्र के दौरान सिक्योंग ने 'तिब्बती पठार के वैश्विक महत्व' पर मुख्य भाषण दिया, जिसमें 'दुनिया की छत' कहे जानेवाले तिब्बत की ऊंचाई और वैश्विक पर्यावरण, जलवायु और भूविज्ञान के लिए इसके महत्व पर जोर दिया गया। सिक्योंग ने भारत-तिब्बत संबंधों के लंबे इतिहास के बारे में बात की। सदियों से चले आ रहे इस संबंध में सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक पहलू शामिल हैं। सत्र में महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के छात्र उपस्थित थे। ४० मिनट तक संबोधन के बाद प्रश्नोत्तर सत्र हुआ और अधिकांश छात्रों ने प्रश्नोत्तर सत्र में गहरी रुचि लेते हुए सक्रिय रूप से भाग लिया। अपने भाषण से पहले सिक्योंग ने कॉलेज के संकाय सदस्यों के साथ संक्षिप्त बातचीत की।

दोपहर के भोजन के दौरान तिब्बती राजनीतिक नेता ने तिब्बत मुक्ति साधना के संबंध में न्यू इंडियन एक्सप्रेस के बाला चौहान को साक्षात्कार दिया।

सिक्योंग ने बाद में भारत सरकार की पूर्व विदेश सचिव श्रीमती निरुपमा राव से दोपहर में उनके आवास पर मुलाकात की। उन्होंने श्रीमती राव के साथ तिब्बत की वर्तमान स्थिति और तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन पर चर्चा की और तिब्बत के हित के लिए उनसे निरंतर समर्थन मांगा।

◆ सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने सेंट जोसेफ विश्वविद्यालय का दौरा किया

tibet.net, ०९ फरवरी २०२४

बेंगलुरु। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने अपनी बेंगलुरु यात्रा के दौरान ०७ फरवरी २०२४ को सेंट जोसेफ विश्वविद्यालय के छात्रों और संकाय सदस्यों को संबोधित किया।

सिक्योंग ने विश्वविद्यालय के निदेशक मंडल के साथ २० मिनट तक बातचीत की और छात्रों और संकाय सदस्यों को संबोधित किया। सिक्योंग ने अपने भाषण में तिब्बती पठार के वैश्विक महत्व के साथ-साथ भारत और तिब्बत के बीच ऐतिहासिक और समकालीन संबंधों पर चर्चा की। सिक्योंग ने चीन की वर्तमान आर्थिक स्थिति पर अपने विचार साझा किए और तिब्बती लोगों के प्रति चीन की कठोर नीतियों और तिब्बती मामलों में उसके हस्तक्षेप और गलतबयानी को रेखांकित किया।

भाषण के बाद उत्तर-पूर्व और तिब्बती छात्र मंच तथा अंतरराष्ट्रीय छात्रों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी और आगत तिब्बती राजनीतिक नेता के सम्मान में दोपहर के भोजन का आयोजन किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति फादर डॉ. विक्टर लोबो एसजे ने यहां आने के लिए सिक्योंग की सराहना की और कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रतीक तौर पर एक स्मारिका भेंट की।

◆ चीन ने डैम परियोजना का विरोध कर रहे १००० से अधिक तिब्बतियों को गिरफ्तार किया सूत्रों का कहना है कि गिरफ्तार लोगों को अपना बिस्तर और भोजन लाने के लिए कहा जाता है, जिससे पता चलता है कि उन्हें जल्द रिहा नहीं किया जाएगा।

rfa.org / काल्डेन लोडो और तेनज़िन पेमा, २३ फरवरी, २०२४

तिब्बत के अंदर से दो सूत्रों ने रेडियो फ्री एशिया को बताया कि पुलिस ने शुक्रवार को दक्षिण-पश्चिमी चीन के सिचुआन प्रांत में दो स्थानीय मठों के भिक्षुओं सहित १,००० से अधिक तिब्बतियों को गिरफ्तार कर लिया। ये लोग एक डैम के निर्माण का विरोध कर रहे थे। इस डैम से छह मठों के खत्म होने के साथ ही दो गांवों को जबरन विस्थापित किए जाने की आशंका है।

सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर सूत्रों ने बताया कि गिरफ्तार किए गए दोनों मठों के भिक्षुओं और स्थानीय निवासियों को कार्दज़े तिब्बती प्रिफेक्चर में डेगे काउंटी में विभिन्न स्थानों पर रखा गया है। क्योंकि पुलिस के पास उन्हें हिरासत में रखने के लिए कोई जगह नहीं है।

सूत्रों ने कहा कि गिरफ्तार किए गए लोगों को अपना बिस्तर और छम्पा लाने के लिए मजबूर किया गया है। छम्पा तिब्बतियों के आहार में

मुख्य भोजन है, जिसका उपयोग लंबे समय तक खुद को जीवित रखने के लिए किया जा सकता है।

सूत्रों में से एक ने कहा, 'पुलिस तिब्बतियों को छम्पा और बिस्तर लाने के लिए कह रही है, यह संकेत है कि उन्हें जल्द रिहा नहीं किया जाएगा।'

गुरुवार, २२ फरवरी को चीनी अधिकारियों ने स्थानीय निवासियों के साथ वोंटो और येना मठों से १०० से अधिक तिब्बती भिक्षुओं को गिरफ्तार करने के लिए कार्दज़े के ऊपरी वोंटो गांव क्षेत्र में विशेष रूप से प्रशिक्षित सशस्त्र पुलिस बलों को तैनात किया था। सूत्रों ने कहा कि इन बलों ने कई

लोगों और भिक्षुओं को पीटा और घायल कर दिया। बाद में चिकित्सा उपचार के लिए उन्हें डेगे के काउंटी अस्पताल में भर्ती कराया गया।
गुरुवार को विशेष रूप से आरएफए को उपलब्ध कराए गए सिटीजन वीडियो में साफ दिख रहा है कि काली वर्दी में चीनी अधिकारियों ने भिक्षुओं को जबरन रोक रहे हैं। इस दौरान भिक्षु डैम निर्माण को रोकने के लिए जोर- जोर से नारे लगा रहे हैं।

सूत्रों ने बताया कि सामूहिक गिरफ्तारियों की खबर के बाद ऊपरी वोंटो गांव के कई तिब्बती जो देश के अन्य हिस्सों में काम करते हैं, अपने गृहनगर लौट आए और गिरफ्तार तिब्बतियों की रिहाई के लिए हिरासत केंद्रों तक गए। लेकिन उन्हें भी वहां गिरफ्तार कर लिया गया है।
आरएफए द्वारा टिप्पणी का अनुरोध किए जाने का डेगे काउंटी अस्पताल ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया।

वाशिंगटन में चीनी दूतावास ने गुरुवार को जारी एक बयान में कहा कि देश कानून के शासन का सम्मान करता है। बयान में कहा गया, 'चीन कानून के मुताबिक चीनी नागरिकों के वैध अधिकारों और हितों की रक्षा करता है।' इसके अलावा चीन की ओर से गिरफ्तारियों पर कोई टिप्पणी नहीं की गई है।

मेगा डैम परियोजना

स्थानीय तिब्बती चीन द्वारा गंगटुओ जलविद्युत स्टेशन के निर्माण के खिलाफ १४ फरवरी से विरोध-प्रदर्शन और अपील कर रहे थे। चीन द्वारा इसके बाद ये गिरफ्तारियां की गईं हैं।

आरएफए ने १५ फरवरी को रिपोर्ट दी कि गंगटुओ डैम के निर्माण का विरोध करने के लिए कम से कम ३०० तिब्बती काउंटी टाउन हॉल के बाहर एकत्र हुए। गंगटुओ डैम ड्रिचू नदी पर १३,९२० मेगावाट की कुल नियोजित क्षमता के विशाल १३-स्तरीय जलविद्युत परिसर का हिस्सा है। बांध परियोजना ड्रिचू नदी पर है, जिसे चीनी में जिंशा कहा जाता है। यह चीन के सबसे महत्वपूर्ण जलमार्गों में से एक, यांग्त्ज़ी के ऊपरी इलाके में अवस्थित है।

सूत्रों ने आरएफए को बताया कि जलविद्युत स्टेशन के निर्माण से दो गांवों- ऊपरी वोंटो और शिपा के अलावा डेगे काउंटी के वांगबुडिंग टाउनशिप में येना, वोंटो और खारधो के साथ तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र में रबटेन, गोंसार और ताशी जैसे क्षेत्र के छह प्रमुख मठों को जबरन विस्थापित किया जाएगा। इसे लेकर स्थानीय तिब्बती विशेष रूप से परेशान हैं।

सूत्रों ने शुक्रवार को यह भी पुष्टि की कि खराब स्वास्थ्य स्थिति वाले गिरफ्तार किए गए कुछ भिक्षुओं को अपने मठों में लौटने की अनुमति दे दी गई है।
हालांकि इन मठों में छोत्रुल डुचेन या चमत्कार दिवस की पूर्व संध्या पर विरानगी ही छाई रही। इनमें वोंटो मठ भी शामिल है, जो १३वीं शताब्दी के अपने प्राचीन भित्ति चित्रों के लिए विख्यात है। छोत्रुल डुचेन तिब्बती नव वर्ष या लोसार के पहले महीने के १५ वें दिन मनाया जाता है। यह बुद्ध द्वारा किए गए शृंखलाबद्ध चमत्कारों के उत्सव का प्रतीक है।
सूत्रों में से एक ने कहा, 'अतीत में वोंटो मठ के भिक्षु पारंपरिक रूप से बड़ी प्रार्थना सभाओं की अध्यक्षता करते थे और सभी धार्मिक गतिविधियों का आयोजन करते थे। लेकिन इस बार मठ शांत और खाली हैं। ऐतिहासिक महत्व के ऐसे मठों को विनाश की कगार पर खड़े देखना बहुत दुखद है। येना मठ में भी यही स्थिति है।'

चहुंओर विरोध-प्रदर्शन

निर्वासित तिब्बती दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन कर रहे हैं। इसमें भारत का धर्मशाला भी शामिल है, जो निर्वासित तिब्बती आध्यात्मिक धर्मगुरु दलाई लामा का मुख्य केंद्र है।

पिछले सप्ताह तिब्बतियों ने न्यूयॉर्क और स्विट्जरलैंड स्थित चीनी दूतावासों के समक्ष प्रदर्शन किया है। साथ ही कनाडा और अन्य देशों में इस तरह के और अधिक विरोध-प्रदर्शन करने और एकजुटता अभियान चलाने की योजना बनाई गई है।

इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत के प्रबंध निदेशक काई मुलर ने शुक्रवार को एक बयान में कहा, 'डेर्गे की घटनाएं तिब्बत में बीजिंग की विनाशकारी नीतियों की एक झलक हैं। चीनी शासन तिब्बतियों के अधिकारों को कुचलता है और मूल्यवान तिब्बती सांस्कृतिक संपत्तियों को बेरहमी से और सदा-सर्वदा के लिए नष्ट कर देता है।'

उन्होंने कहा, 'बीजिंग की विकास और बुनियादी ढांचा परियोजनाएं न केवल तिब्बतियों के लिए, बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए भी खतरा हैं। खासकर तब, जब प्रभावित एशियाई देशों को पानी की आपूर्ति की बात आती है।'

ह्यूमन राइट्स वॉच ने आरएफए को बताया कि वह इस गतिविधि की निगरानी कर रहा है लेकिन चीन द्वारा कड़ी निगरानी किए जाने और सूचना प्रवाह पर लगाए गए प्रतिबंधों को देखते हुए तिब्बत के अंदर से जानकारी निकालना बेहद दुर्लभ है।

समूह की अंतरिम चीन निदेशक माया वांग ने कहा, 'जो लोग इस तरह की जानकारी और वीडियो भेजते हैं उन्हें कारावास और यातना का सामना करना पड़ता है।'
उन्होंने कहा, 'यहां तक कि भारत में निर्वासित तिब्बतियों के लिए यहां अपने परिवारों से बात करना भी कारावास का कारण बन सकता है। अब हम जो देखते हैं वह वास्तव में तिब्बत में दमन के विशिष्ट दृश्य हैं, लेकिन अब हमें अक्सर यह देखने को नहीं मिलता है कि तिब्बत में किस तरह का दमन चल रहा है।'

◆ निर्वासित तिब्बतियों की किताबें प्रकाशित करने के आरोप में तिब्बती भिक्षु गिरफ्तारदो सूत्रों ने आरएफए को बताया कि कीर्ति मठ के पूर्व लाइब्रेरियन लोबसांग थाबखे को अज्ञात स्थान पर रखा गया है।

rfa.org/ पेलबार, ०५ फरवरी, २०२४

रेडियो फ्री एशिया को पता चला है कि चीनी पुलिस ने जून २०२३ में निर्वासित तिब्बती समुदाय की पुस्तकों को पुनः प्रकाशित करने और क्षेत्र के बाहर के लोगों से संपर्क करने के आरोप में एक तिब्बती बौद्ध भिक्षु को गिरफ्तार किया था।

तिब्बत के अंदर के दो सूत्रों ने सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर बताया कि दक्षिण-पश्चिम चीन के सिचुआन प्रांत में न्गाबा काउंटी में कीर्ति मठ के लाइब्रेरियन के रूप में काम करने वाले ५४ वर्षीय लोबसांग थाबखे को गिरफ्तार करने के बाद से अज्ञात स्थान पर रखा गया है।

एक सूत्र ने आरएफए को बताया कि थाबखे को गिरफ्तारी से पहले चीनी पुलिस ने पूछताछ के लिए उन्हें कई बार बुलाया था।

एक अन्य सूत्र ने कहा, 'उनके खिलाफ जो प्राथमिक आरोप लगाया गया था वह यह था कि उन्होंने कीर्ति मठ में पुस्तकालय के प्रभारी होने के दौरान तिब्बती निर्वासित समुदाय द्वारा लिखी गई पुस्तकों को प्रकाशित और प्रसारित किया था और उन्होंने तिब्बत के बाहर के लोगों के साथ संवाद किया था।'

आरएफए ने न्गाबा पुलिस स्टेशन से संपर्क किया, लेकिन वहां के एक अधिकारी ने कहा कि उन्हें नहीं पता कि थाबखे कौन हैं।

थाबखे न्गाबा के मेरुमा टाउनशिप के मूल निवासी हैं जो २००८ से कई विरोध- प्रदर्शनों और तिब्बत

समर्थक राजनीतिक गतिविधियों का स्थल रहा है।

१९५९ के हुई तिब्बती जनक्रांति की सालगिरह पर २००८ में हुए विरोध- प्रदर्शन पर चीनी दमन में ४०० से अधिक तिब्बती मारे गए थे। इसके साथ ही चीनी अधिकारियों ने तिब्बत के अंदर बड़े विरोध- प्रदर्शनों को दबा दिया था। इसके बाद से तिब्बत में चीनी दमन का विरोध करने के लिए १५८ तिब्बतियों ने आत्मदाह कर लिया है।

चीनी अधिकारी तिब्बत के अंदर तिब्बतियों के लिए क्षेत्र के बाहर के लोगों से संपर्क करना और निर्वासित तिब्बती समुदाय या तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा के साथ संपर्क करने को अवैध मानता है। दलाई लामा को चीन 'अलगाववादी' मानता है।

हालांकि, दलाई लामा और निर्वासित तिब्बती सरकार 'मध्यम मार्ग' दृष्टिकोण की वकालत करते हैं जो चीनी संविधान के दायरे में तिब्बती लोगों के लिए वास्तविक स्वायत्तता की मांग करता है। मध्यम मार्ग दृष्टिकोण तिब्बती सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक पहचान के संरक्षण पर भी जोर देता है।

◆ चीन ने तिब्बती नव वर्ष के मौके पर भिक्षुओं से दलाई लामा को 'बेनकाब और निंदा' करने को कहा अधिकारियों ने प्रतिष्ठित बौद्ध भिक्षुओं से 'मातृभूमि की एकता' की रक्षा करने का आह्वान किया।

rfa.org / पेलबार और तेनज़िन पेमा, ०१ फरवरी, २०२४

तिब्बती नव वर्ष- लोसार के मौके पर चीनी अधिकारियों ने सिचुआन प्रांत के तिब्बती आबादी वाले हिस्सों में कम से कम ३५ बौद्ध मठों का दौरा किया और प्रतिष्ठित भिक्षुओं को उपहार देकर दलाई लामा की 'पूरी तरह से बेनकाब करने और निंदा करने' के अलावा उनसे 'मातृभूमि की एकता' की रक्षा करने का आग्रह किया।

संयुक्त मोर्चा कार्य विभाग के एक बयान के अनुसार, पल्युल (चीनी : बायय्यू) काउंटी में कम्युनिस्ट पार्टी कमेटी के सचिव लियू यान के नेतृत्व में अधिकारियों ने ११ जनवरी से १७ जनवरी तक कार्दज़े तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर में मठों का दौरा किया। संयुक्त मोर्चा कार्य विभाग चीनी सरकार के घरेलू और बाहरी मामलों की देख-रेख करता है।

तिब्बती नव वर्ष- लोसर १० फरवरी को है। १० फरवरी को ही चीन का चंद्र नव वर्ष शुरू होता है। इस समय चीन में साल की सबसे लंबी छुट्टी

होती है।

लियू ने भिक्षुओं को लोसार को शुभकामनाएं दीं और राष्ट्रीय जागरुकता, कानूनी जागरुकता, नागरिक जागरुकता को सचेत रूप से आगे बढ़ाने के साथ ही 'दलाई लामा और दलाई गुट की विभाजनकारी प्रकृति को पूरी तरह से उजागर करने और उनकी निंदा करने' की आवश्यकता पर जोर दिया।

बीजिंग का मानना है कि भारत के धर्मशाला में निर्वासन में रह रहे तिब्बती आध्यात्मिक नेता तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र और चीन के सिचुआन और किंघई प्रांतों के तिब्बती आबादी वाले क्षेत्रों को देश से अलग करना चाहते हैं।

हालाकि, असलियत यह है कि दलाई लामा तिब्बत की स्वतंत्रता की वकालत नहीं करते हैं, बल्कि 'मध्यम मार्ग' दृष्टिकोण की वकालत करते हैं। इसके तहत तिब्बत को चीन के हिस्से के रूप में स्वीकार किया जाता है और तिब्बत के लिए अधिक सांस्कृतिक और धार्मिक स्वतंत्रता का आग्रह करता है। इस मांग में मजबूत भाषा अधिकार भी शामिल हैं जिसकी गारंटी चीन के संविधान में भी जातीय अल्पसंख्यकों के लिए दी गई है।

अधिकारियों ने क्षेत्र के पल्युल मठ, याचेन गार मठ और काटोग मठ समेत प्रसिद्ध मठों का दौरा किया। ये सभी मठ बौद्ध धर्म के वज्रयान निंगमा संप्रदाय से जुड़े हैं।

लियू ने २२ जनवरी को चेंगदू में विभिन्न संप्रदायों के प्रतिनिधियों के साथ अलग से बैठक का भी नेतृत्व किया, जहां उन्होंने आदेश दिया कि तिब्बती बौद्ध नेता यह सुनिश्चित करें कि मठवासी समूह और उनके अनुयायी 'मातृभूमि की एकता और राष्ट्रीय एकता की दृढ़ता से रक्षा करें।'

उन्होंने उनसे 'पांच पहचान' को बढ़ावा देने का आग्रह किया, जिसे राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने बार-बार कहा है कि यह सभी चीनी नागरिकों और अल्पसंख्यक समूहों के लिए आवश्यक है। इनमें मातृभूमि, चीनी राष्ट्र, चीनी संस्कृति, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी विशेषताओं वाले समाजवाद की पहचान शामिल है।

'धोखे की ट्टी'

तिब्बत की स्थितियों पर नजर रखने वाले विशेषज्ञों ने चीन के इस कदम की आलोचना करते हुए इसे कपटपूर्ण करार दिया। उन्होंने इस कदम को पल्युल में तिब्बती मठवासी समुदाय पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की लाइन पर चलने का दबाव बनाने की एक चाल बताया।

धर्मशाला स्थित केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के आधिकारिक थिंक टैंक- तिब्बत नीति संस्थान- के निदेशक दावा छेरिंग ने कहा, 'महत्वपूर्ण अवसरों और छुट्टियों पर तिब्बती भिक्षुओं और भिक्षुणियों को शुभकामनाएं और नकद उपहार देने की चीनी सरकार की प्रथा वास्तव में 'धोखे की ट्टी' है।

उन्होंने रेडियो फ्री एशिया को बताया, 'चीनी अधिकारी जिस तरह का व्यवहार कर रहे हैं और शुभकामनाएं दे रहे हैं, उसे किसी भी तरह से ईमानदार शुभकामना नहीं कहा जा सकता है। चीनी सरकार आम तौर पर तिब्बतियों को इस तरह का उपहार देती है और इसके एवज में लोगों पर दलाई लामा की निंदा करने और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति निष्ठा रखने के लिए दबाव डालने का काम करती है।'

लंदन स्थित तिब्बत वॉच के एक शोधकर्ता पेमा ग्याल ने आरएफए को बताया कि चीनी सरकार महत्वपूर्ण अवसरों और समारोहों पर की जानेवाली इस तरह की यात्राओं का उपयोग 'आम जनता में अपना प्रचार करने और अपनी दमनकारी नीतियों के बारे में जागरुकता पैदा करने के

बहाने के रूप में करती है।'
चीनी अधिकारियों ने पल्युल काउंटी में नए साल के संदेश के तौर पर तिब्बती प्रधान बौद्ध भिक्षुओं को 'पार्टी के धार्मिक कार्य सिद्धांतों और नीतियों का गहराई से व्यवस्थित अध्ययन और राजनीतिक शिक्षा ग्रहण करने' का भी आदेश दिया। लियू ने कहा, इन संदेशों में तिब्बती बौद्ध धर्म के चीनीकरण के लिए शी के निर्देशों का पालन करने के महत्व के बारे में जागरुकता फैलाना भी शामिल है, जो धार्मिक सिद्धांतों, शिक्षाओं और रीति- रिवाजों की व्याख्या करते समय समाजवादी मूल्यों को ध्यान में रखने को अनिवार्य बनाता है।

जनवरी २०२१ में धार्मिक मामलों के प्रशासन (स्टेट एडमिस्ट्रेशन ऑफ रिलिजियस अफेयर) द्वारा पारित किए गए धार्मिक पादरी विनियमन (अडमिंस्ट्रेटीवे मेजर्स फॉर रिलिजियस क्लेर्जी रेगुलेशन) के तहत यह अनिवार्य किया गया है कि कम्युनिस्ट पार्टी के प्रशासनिक उपायों के तहत धार्मिक पुजारियों को 'धर्मों के चीनीकरण' या 'धर्मों को चीन के समाजवादी समाज के अनुकूल करने' के लिए शी की योजनाओं का समर्थन करना चाहिए और देश के राष्ट्रीय हित एवं विचारधारा के अनुरूप इसमें काम करना चाहिए।

◆ तिब्बत समर्थक समूहों का नौवां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न

tibet.net, २५ फरवरी, २०२४

ब्रुसेल्स। तिब्बत समर्थक समूहों का तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन २५ फरवरी २०२४ को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। सम्मेलन को ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय और सीटीए के सूचना और अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा पूरा सहयोग दिया गया था।

समापन समारोह में निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल, सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के कालोन नोरज़िन डोल्मा और फ्रेंच पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत के अध्यक्ष सीनेटर यूस्टाचे-ब्रिनियो ने अपनी अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण को व्यक्त करते हुए भाषण दिया। समारोह के संचालक के रूप में सीटीए के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के अतिरिक्त सचिव तेनज़िन लेक्षय ने समापन सत्र की अध्यक्षता की।

स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल ने अपने मुख्य भाषण में इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत से संबंधित मुद्दों को राजनीति से अधिक गहरे स्तर पर

संबोधित करने की आवश्यकता है क्योंकि वह करुणा और अहिंसा पर आधारित तिब्बती संस्कृति के अस्तित्व और विरासत को प्रभावित करते हैं।

उन्होंने तिब्बती संघर्ष की दिशा को निर्धारित करने में तिब्बती पक्षकारों और समर्थक समूहों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिकाओं को भी रेखांकित किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि तिब्बत का इतिहास बहुत महत्व रखता है और वहां समर्थक समूहों के निस्वार्थ समर्पण को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। तिब्बत को अब पहले से कहीं अधिक समर्थन की आवश्यकता है। इसके लिए महत्वपूर्ण है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय तिब्बत-चीन संघर्ष को पीआरसी द्वारा परिभाषित चीन के आंतरिक मामले के बजाय एक अंतरराष्ट्रीय मुद्दे के रूप में देखे।

उन्होंने आगे मांग की कि नीति निर्माता और उसे लागू करनेवाले अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन करें और किसी भी तरह से तिब्बत पर चीन की संप्रभुता के दावों का समर्थन या स्वीकार करने से बचें। स्पीकर ने कहा, 'निर्वासित तिब्बती संसद के पास विधायी निकाय के नियमित संचालन के अलावा सरकारी पक्षधरता अभियानों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय और भारतीय संसद सदस्यों और भारत में आम जनता तक पहुंचने की योजना भी हैं'।

अध्यक्ष ने यह कहते हुए अपने संबोधन का समापन किया कि निर्वासित तिब्बती संसद जापान की राजधानी टोक्यो में तिब्बत पर नौवें विश्व संसदीय सम्मेलन का आयोजन कर रही है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि

नौवें अंतरराष्ट्रीय तिब्बत समर्थक समूह सम्मेलन में भाग लेने वालों की सहायता और समर्थन से संसद के कई सदस्य भाग लेंगे।

फ्रेंच इंटरनेशनल इंफॉर्मेशन ग्रुप ऑन तिब्बत के अध्यक्ष सीनेटर जैकलीन यूस्टाचे-ब्रिनियो ने अपने समापन भाषण में इस बात पर प्रकाश डाला कि चीनी अधिकारी तिब्बती पहचान के तीन मुख्य स्तंभों- धर्म, भाषा और संस्कृति को कमजोर करना जारी रखे हुए हैं। उन्होंने आगे कहा कि तिब्बती धर्म पर कड़ी नजर रखी जा रही है और उसका अनादर किया जा रहा है। जबकि शैक्षणिक और व्यावसायिक तंत्र में तिब्बती भाषा की उपेक्षा की जा रही है। यहां

तक कि तिब्बती बच्चों को बोर्डिंग स्कूलों में जाने के लिए मजबूर किया जा रहा है जहां उन्हें चीनी भाषा सिखाई जाती है और नई चीनी पहचान अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

उन्होंने कहा कि अधिकारियों द्वारा तिब्बती लोगों की पहचान और प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट करने के लिए उठाए गए सभी कदम न केवल तिब्बतियों की पीड़ा को बढ़ाते हैं बल्कि पश्चिमी देशों के लिए भी चिंताएं बढ़ाते हैं। इसलिए, यह जरूरी है कि प्रत्येक राजनीतिक संगठन, एनजीओ और सार्वजनिक हस्ती को आर्थिक हितों की परवाह किए बिना तिब्बत के मुद्दे पर स्पष्ट रूप से बोलना चाहिए, ताकि बीजिंग में बैठे अधिकारियों को यह सूचित किया जा सके कि उनके लिए क्या अस्वीकार्य है। तिब्बत पर सूचना समूह के सीनेटर के रूप में हम तिब्बत में कैदियों के साथ-साथ शरण मांगने और मानवाधिकारों का सम्मान करने में विफलता की निंदा करने वाले तिब्बतियों के लिए फ्रांसीसी सरकार के साथ हस्तक्षेप करना जारी रखेंगे।

अपने समापन भाषण में सीटीए के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के कालोन (मंत्री) नोरज़िन डोल्मा ने तिब्बत मुद्दे की निरंतर प्रासंगिकता के प्रतीक के रूप में तिब्बत समर्थकों समूहों के नौवें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने टिप्पणी की, 'इस उद्देश्य को मुख्य रूप से परम पावन दलाई लामा की करुणा, अहिंसा, संवाद और मेल-मिलाप की भावना और प्रतिबद्धता के आधार पर आकार दिया गया है।'

उन्होंने वर्षों से तिब्बती स्वतंत्रता के संघर्ष में स्वेच्छा से अपना समय, ऊर्जा, विशेषज्ञता और संसाधनों का योगदान देने के लिए प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया। उनके प्रयासों का प्रभाव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महसूस किया गया है, तिब्बत पर स्पॉटलाइट बढ़ी है और यह मुद्दा अधिक प्रकाश में आया है। इससे नवीन जमीनी स्तर की सक्रियता, संसदीय प्रक्रियाओं, लॉबी के प्रयासों, मीडिया की सक्रियता और संयुक्त राष्ट्र की पहलों और विभिन्न तंत्रों के उपयोग के माध्यम से पीआरसी सरकार और अंतरराष्ट्रीय समुदाय पर दबाव बढ़ गया है। उन्होंने प्रतिभागियों की तिब्बत और तिब्बत के लोगों से संबंध, जुड़ाव और प्रतिबद्धता की भावना के लिए भी आभार व्यक्त किया। उन्होंने यह भी कहा है कि लंबे समय से चले आ रहे चीन-तिब्बत संघर्ष का समाधान खोजने और तिब्बत के अंदर मानवाधिकार की स्थिति में सुधार लाने के लिए उनके प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं।

इसके अलावा, कालोन ने तिब्बत के बारे में बात की और बताया कि कैसे चीन की कठोर नीतियों के परिणामस्वरूप तिब्बती संस्कृति, भाषा और पहचान धीरे-धीरे खत्म हो रही है। इसमें धार्मिक स्वतंत्रता में कटौती, गहन निगरानी, आवाजाही और व्यापार पर प्रतिबंध, पारिस्थितिक क्षति और जल असुरक्षा शामिल है। ये चुनौतियां बरकरार हैं, लेकिन तिब्बत समर्थक समूहों और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सामूहिक प्रयासों से कुछ सकारात्मक परिणाम मिले हैं। इससे तिब्बत फिर से वैश्विक सुर्खियों में आ गया है। हालांकि, अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है और हमें उन क्षेत्रों में और सफलता हासिल करने के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण के साथ मिलकर काम करना जारी रखना चाहिए जहां हम अभी तक नहीं पहुंच पाए हैं। हमें बातचीत के माध्यम से तिब्बत में संघर्ष के अंतिम समाधान को प्राप्त करने के लिए पहले से ही की गई प्रगति को एकीकृत और सुदृढ़ करना चाहिए।

सीटीए के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के सचिव कर्मा चोयिंग ने धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि 'हम प्रतिस्पर्धी के बजाय पूरक भागीदार हैं। इसलिए हमें भाईचारे और एकता की भावना के साथ मिलकर काम करना चाहिए। आप में से कई लोग लंबे समय से तिब्बत के समर्थक रहे हैं और हमारे साथ आपका जुड़ाव और इस मुद्दे के प्रति अमिट प्रतिबद्धता तिब्बतियों की लड़ाई के प्रति आपकी वास्तविक चिंता का प्रमाण है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है।'

सचिव ने अपने संबोधन को समाप्त करने से पहले कहा कि तिब्बत की आजादी और शांतिपूर्ण दुनिया के लिए लड़ाई सिर्फ हमारी अकेले की लड़ाई नहीं है। हमारी जिम्मेदारी है कि हम युवा पीढ़ी को संघर्ष जारी रखने की कमान सौंपें। २०२१ में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के नेतृत्व में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों से युवा तिब्बतियों को तिब्बती मुद्दे पर अपना पक्ष रखने में सक्रियता को प्रोत्साहित करने के लिए स्वैच्छिक तिब्बती पक्षधरता समूह (वीटीएजी) की शुरुआत की। वर्तमान में हमारे पास १८ देशों में ३९ वीटीएजी में ५२१ प्रेरित युवा तिब्बती हैं। इसके साथ ही हम अपनीविरासत को आगे बढ़ाने के लिए अपनी पीढ़ी के अधिक से अधिक युवाओं को नेटवर्क में लाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। इन युवा अभियानी कार्यकर्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे तिब्बती मुद्दे को बढ़ावा देने के लिए तिब्बती समर्थक समूहों (टीएसजी) और अन्य पक्षों के साथ मिलकर काम करेंगे।

◆ प्रेस विज्ञप्ति: अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने द्विदलीय समर्थन से तिब्बत समाधान अधिनियम पारित किया

tibet.net, १६ फरवरी, २०२४

धर्मशाला। अमेरिकी कांग्रेस के निचले सदन- प्रतिनिधि सभा ने १५ फरवरी २०२४ को दोनों दलों के समर्थन से पेश 'तिब्बत समाधान विधेयक (रिसोल्वे तिब्बत बिल)' को सर्वसम्मति से पारित कर दिया। इस विधेयक को आधिकारिक रूप से 'तिब्बत-चीन विवाद अधिनियम (एचआर ५३३) के समाधान को बढ़ावा देना (प्रोमोटिंग ए रेसोलुशन टू द तिब्बत-चाइना डिसप्यूट एक्ट ' नाम दिया गया है। विधेयक को सदन की मंजूरी तिब्बतियों और उसके समर्थकों के लिए एक बड़ी उपलब्धि का प्रतीक है जो तिब्बत और तिब्बती मुद्दे के प्रति मजबूत द्विदलीय समर्थन से प्रदर्शित हो रहा है। यह विधेयक तिब्बत-चीन संघर्ष को हल करने के लिए पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना और परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधियों या लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित तिब्बती नेताओं के बीच बिना किसी पूर्व शर्त के सीधी बातचीत का समर्थन करने की अमेरिकी नीति की पुष्टि करता है।

प्रतिनिधि सभा से विधेयक के पारित होने के बाद अपनी प्रतिक्रिया में

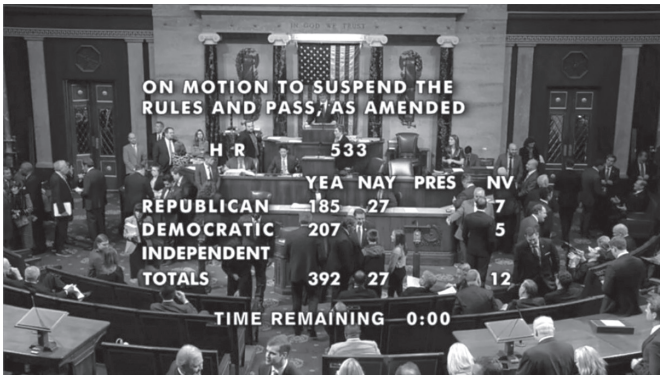

सिक्योंग ने कहा, 'कब्जे वाले तिब्बत और निर्वासित तिब्बतियों की ओर से मैं इस विधेयक का समर्थन करने के लिए सभी सदस्यों के साथ विधेयक पेश करने वाले प्रतिनिधि जिम मैकगवर्न और प्रतिनिधि माइकल मैककॉल के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। यह उपलब्धि हमें विधेयक को कानून बनाने के करीब ले जाती है। अब हम सकारात्मक रूप से सीनेट द्वारा विधेयक की मंजूरी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।' सिक्योंग ने आगे कहा कि यह सफलता सीटीए, तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान, तिब्बती संघों और गैर सरकारी संगठनों, तिब्बत समर्थक समूहों और व्यक्तियों के सहयोगात्मक पक्षधरता प्रयासों को दर्शाती है।'

इस विधेयक के अधिनियमन से तिब्बती और चीनी दोनों के नागरिकों के सर्वोत्तम हित में तिब्बत-चीन संघर्ष को हल करने के लिए मध्यम मार्ग दृष्टिकोण और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की बातचीत की प्रतिबद्धता मजबूत होगी।

◆ डिप्टी स्पीकर ने तिब्बती आत्मदाह पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया

tibetanparliament.org, २७ फरवरी, २०२४

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग ने २७ फरवरी, २०२४ को त्सुगलगखांग में तिब्बत संग्रहालय द्वारा आयोजित 'ज्वलंत प्रश्न - तिब्बती आत्मदाह की ओर क्यों बढ़ रहे हैं?' नामक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

आत्मदाह करने वालों के सम्मान में दीप जलाया गया। चित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन के बाद डिप्टी स्पीकर ने मीडिया के सवालों का जवाब दिया और तिब्बत में स्थिति की तात्कालिकता पर प्रकाश डाला जो तिब्बतियों को कठोर नीति के विरोध में आत्मदाह करने के लिए मजबूर कर रहा है। उन्होंने चीन और तिब्बत की वास्तविक स्थिति पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकर्षित करने का भी प्रयास किया।

प्रदर्शनी आत्मदाह करनेवाले तिब्बतियों की आकांक्षाओं पर प्रकाश डालती है। प्रदर्शनी में तिब्बत के तीन प्रांतों में आत्मदाह स्थलों को प्रदर्शित करने वाला एक नक्शा लगाया गया है। यह प्रदर्शनी तिब्बत में पहले तिब्बती आत्मदाह की १५वीं वर्षगांठ का भी प्रतीक है। सबसे पहले २७ फरवरी २००९ को कीर्ति मठ के टेपी ने आत्मदाह किया था।

◆ तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री से भेंट की

tibet.net, ०६ फरवरी, २०२४

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा भारत के विभिन्न राज्यों में एडवोकेसी अभियान चलाने की योजना के तहत सांसद गेशे न्गावा गांगरी और तेनज़िन चोएज़िन के एक प्रतिनिधिमंडल ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साई और उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा से मुलाकात की। मुख्यमंत्री के साथ बैठक के दौरान तिब्बती सांसदों ने मैनपाट तिब्बती बस्ती के तिब्बती निवासियों के सामने आने वाली समस्याओं को उठाया। साथ ही मैनपाट के तिब्बती बस्ती कार्यालय द्वारा पहले प्रस्तुत की गई चिंताओं को भी दोहराया। तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी यांगछो के साथ तिब्बती सांसदों ने राज्य में २०१४ की तिब्बती पुनर्वास नीति को लागू करने का आग्रह किया।

सीएम और डिप्टी सीएम के साथ चर्चा में सांसदों ने निर्वासित तिब्बती संसद की गतिविधियों, तिब्बती प्रवासी की स्थिति, तिब्बत में वर्तमान गंभीर स्थिति और कई अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में व्यापक जानकारी दी। प्रतिनिधिमंडल ने सम्मान के प्रतीक के तौर पर सीएम और डिप्टी सीएम को तिब्बती संसद के स्मृति चिन्ह और औपचारिक स्कार्फ से सम्मानित किया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. विवेक त्रिपाठी, डॉ. घनश्याम साहू और कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल के साथ प्रतिनिधिमंडल ने इंद्रा गांधी कृषि विश्वविद्यालय और उसके अनुसंधान केंद्र का दौरा किया। उन्होंने कृषि अनुसंधान पर केंद्रित सभा में सक्रिय रूप से भाग लिया और वहां चीन-तिब्बती संघर्ष पर संक्षिप्त जानकारी भी दी।

◆ तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल का गोवा में एडवोकेसी अभियान संपन्न

tibet.net, ०४ फरवरी २०२४

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के एक प्रतिनिधिमंडल ने गोवा में अपना आधिकारिक तिब्बत एडवोकेसी कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न किया। प्रतिनिधिमंडल में सांसद गेशे ल्हारम्पा अटुक छेतेन, छानेछांग धोंडुप ताशी और छेरिंग यांगचेन शामिल थे। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने राज्य विधानसभा के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्रियों और सांसदों से मुलाकात की।

२७ जनवरी को कैलंगुट और बागा के तिब्बती स्वेटर विक्रेताओं के अध्यक्ष ताशी राप्टेन और प्रतिनिधियों ने सांसदों से संपर्क कर अपनी शिकायतों से उन्हें अवगत कराया था। इसके बाद तिब्बती सांसदों ने राज्य के नेताओं के साथ अपनी बैठक में कपड़ा विक्रेताओं के प्रतिनिधियों को भी शामिल करने की अनुमति ले ली थी। तिब्बती सांसदों के साथ राज्य के नेताओं से मिलने गए सोनम छोमो, न्यिमा छेरिंग, कांगंगा और जिनपा को राज्य के प्रमुख नेताओं की ओर से शिकायतों को दूर करने में सहायता का आश्वासन मिला।

अगले दिन उन्होंने गोवा के स्वास्थ्य, टीसीपी, वन, शहरी विकास, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्री विश्वजीत राणे के साथ बैठक की। तिब्बती सांसदों ने मंत्री को तिब्बती संसद की एक स्मारिका और एक दस-सूत्रीय अपील-पत्र भेंट किया, जिसमें तिब्बत मुद्दे की जोरदार वकालत की गई है। इसके बाद उन्हें गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री और श्री विश्वजीत के पिता श्री प्रताप सिंह राणे से मिलने का सौभाग्य मिला। बैठक के दिन श्री प्रताप सिंह राणे का ८५वां जन्मदिन भी था। १९६१ में गोवा में पुर्तगाली शासन के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले श्री प्रताप सिंह राणे ने सात बार गोवा के प्रभावशाली मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया है।

दोपहर में संसद सदस्यों ने डॉ. बी.आर. आंबेडकर के अनुयायी विश्वभूषण समिति नामक भारतीय बौद्ध संघ की कार्य समिति की नई चुनावी बैठक में भाग लिया। यहां सांसद छेरिंग यांगचेन ने निर्वासित तिब्बती संसद के कामकाज पर जानकारी दी और धोंदुप ताशी सहित संसद सदस्यों ने तिब्बत में बोर्डिंग स्कूलों की स्थिति के बारे में बात की। उधर, गेशे ल्हारम्पा अटुक छेतेन ने धार्मिक सद्भाव के बारे में बात की। अंत में नए अध्यक्ष श्री सतीश एस. कारगनाकर, पूर्व अध्यक्ष श्री. एस. जाधव और महासचिव श्री निखिल प्राजक्ते को तिब्बती औपचारिक स्कार्फ ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

२९ जनवरी की सुबह गोवा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जोआना पी. कोएल्हो के सहयोग से सांसद छेरिंग यांगचेन ने गोवा विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान विभाग में 'भारत के लिए तिब्बत क्यों मायने रखता है' विषय पर व्याख्यान दिया। बातचीत के दौरान उन्होंने निर्वासित तिब्बती समुदाय के जीवन और तिब्बत में संकट पर भी चर्चा की। इसके बाद उन्होंने राज्यसभा सदस्य एवं गोवा भाजपा के अध्यक्ष श्री सदानंद तनावड़े से मुलाकात की और उन्हें तिब्बती संसद का अपील-पत्र, संबंधित दस्तावेज एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया। दोपहर में उनकी मुलाकात गोवा के विधायक और गोवा कांग्रेस के अध्यक्ष श्री यूरी अलेमाओ से हुई। अलेमाओ को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के कामकाज के बारे में जानकारी दी गई और धर्मशाला आने का निमंत्रण दिया गया।

२९ जनवरी की शाम को सांसदों ने गोवा विधानसभा के अध्यक्ष श्री रमेश तवाड़कर से मुलाकात की और उपरोक्त मुद्दों पर जानकारी दी। स्पीकर ने तिब्बत के उचित मुद्दे को अपना समर्थन देने का आश्वासन दिया।

३० जनवरी को सांसदों ने गोवा कांग्रेस के महासचिव श्री सावियो डिसूज़ा से मुलाकात की और महात्मा गांधी की शहादत की ७६वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। इसके बाद उन्होंने गोवा विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री जोशुआ डिसूजा के साथ बैठक की। इसके बाद गोवा सरकार में समाज कल्याण, नदी जलमार्ग, अभिलेखागार और पुरातत्व मंत्री श्री सुभाष फाल देसाई और राज्यसभा और ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत (एपीआईपीएफटी) के पूर्व सदस्य श्री विनय तेंदुलकर के साथ मुलाकात की। बाद में शाम को ये सांसद कैलंगुट में तिब्बती कपड़ा विक्रेताओं से मिलने गए।

अंत में ३१ जनवरी को निर्वासित तिब्बती संसद के प्रतिनिधिमंडल ने गोवा के मुख्य सचिव श्री (डॉ.) पुनीत कुमार गोयल से मुलाकात की और उन्हें संबंधित दस्तावेज प्रस्तुत किए गए और उपरोक्त मुद्दों से अवगत कराया।

◆ प्रतिनिधि नामग्याल चोएडुप ने चेक दूतावास के लंच में भाग लिया

tibet.net, ०७ फरवरी, २०२४

वाशिंगटन-डीसी। चेक विदेश मंत्रालय के मानवाधिकार और संक्रमण नीति विभाग की निदेशक वेरोनिका मिटकोवा की आधिकारिक अमेरिकी यात्रा के अवसर पर वाशिंगटन डीसी स्थित चेक दूतावास ने मंगलवार ०६ फरवरी को चेक राजदूत के आवास पर दोपहर के भोजन की मेजबानी की। क्यूबा, वेनेज़ुएला, रूस और ईरान के मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के साथ दोपहर के भोजन में तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि नामग्याल चोएड्रुप और कर्मचारी सुल्ट्रिम ग्यात्सो शामिल हुए।

राजदूत मिलोस्लाव स्टासेक ने वेरोनिका मिटकोवा के साथ दोपहर के भोजन में शामिल होने वाले मेहमानों का स्वागत किया। राजदूत ने इस बात पर जोर दिया कि चेक सरकार अपनी विदेश नीति के प्रमुख घटकों के रूप में मानवाधिकारों और लोकतंत्र को प्राथमिकता देती है। निदेशक मिटकोवा ने राष्ट्रपति वैक्लाव हावेल के साथ काम करने की अपनी यादों और सरकार और नागरिक समाज के तौर पर मानवाधिकार मुद्दे के क्षेत्र में अपनी भागीदारी को याद किया। स्वतंत्र दुनिया के समान विचारधारा वाले देशों के साथ काम करने में चेक सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करने के साथ ही उन्होंने दुनिया भर में अधिनायकवादी शासनों को गंभीर मानवाधिकारों के हनन के लिए जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने मानवाधिकार रक्षकों सहित मीडिया और नागरिक समाज को चेक सरकार के ठोस समर्थन का भी आश्वासन दिया। उन्होंने मेहमानों से अपने अनुभव बयां करने का आग्रह किया और इस पर सुझाव और प्रतिक्रिया मांगी कि कैसे चेक सरकार दुनिया भर में मानवाधिकारों और लोकतंत्र के लिए अपने समर्थन को और मजबूत कर सकती है।

प्रतिनिधि नामग्याल चोएड्रुप ने तिब्बती मुद्दे के प्रति अटूट समर्थन और दुनिया भर में अधिनायकवादी शासनों के खिलाफ खड़ा होने और मानवाधिकारों और लोकतंत्र पर सैद्धांतिक विदेश नीति अपनाने में वैश्विक और नैतिक नेतृत्व के लिए चेक सरकार और वहां के लोगों के प्रति गहरी सराहना व्यक्त की। उन्होंने आगे बताया कि कैसे चीनी कम्युनिस्ट शासन द्वारा तिब्बत पर ७० वर्षों से अधिक समय के कब्जे के बावजूद, बीजिंग तिब्बती लोगों का विश्वास जीतने में सक्षम नहीं हो पाया है। उन्होंने यह भी बताया कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए तिब्बती लोगों सहित दुनिया भर के उत्पीड़ित लोगों के लिए मानवाधिकार और लोकतंत्र पर सैद्धांतिक रुख अपनाना बहुत जरूरी और महत्वपूर्ण है।

◆ जापान में तिब्बत समर्थक समूहों की वार्षिक बैठक आयोजित

tibet.net, १९ फरवरी २०२४

टोक्यो। जापान में तिब्बत समर्थक समूहों ने १८ फरवरी २०२४ को वार्षिक बैठक आयोजित की। इस बैठक का आयोजन सेव तिब्बत नेटवर्क, तिब्बत हाउस जापान और तिब्बती समुदाय जापान (टीसीजे) ने संयुक्त रूप से किया।

सेव तिब्बत नेटवर्क के अध्यक्ष माकिनो सेशु ने सदस्यों का स्वागत किया और बताया कि वह इतने वर्षों तक तिब्बत मुद्दे से कैसे जुड़े रहे हैं। साथ ही किस तरह से स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए तिब्बती संघर्ष दुनिया में शांति और सद्भाव से जुड़ा हुआ है। उन्होंने सदस्यों को परम पावन दलाई लामा के शांति और अहिंसा के संदेश और संवाद के माध्यम से संघर्षों के समाधान के बारे में लोगों को बताया।

संसद सदस्य और जापान पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत के महासचिव इशिकावा अकीमासा ने तिब्बत मुद्दे के समाधान के लिए समर्थन व्यक्त किया और सदस्यों को संसदीय समर्थक समूह की गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने पिछले साल सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय विभाग की कालोन नोरज़िन डोल्मा की यात्रा के बारे में बात की और बताया कि इस यात्रा ने जापानी सांसदों और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के बीच संबंधों को और मजबूत किया।

सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के सचिव कर्मा चोयिंग ने सदस्यों को उनके ईमानदार समर्थन के लिए बधाई दी और धन्यवाद दिया। उन्होंने यह भी बताया कि चीन आक्रामक हो रहा है और तिब्बती धर्म, संस्कृति और पहचान को नष्ट कर रहा है। जापान और पूर्वी एशिया के लिए परम पावन दलाई लामा के संपर्क कार्यालय के प्रतिनिधि डॉ. छेवांग ग्यालपो आर्य ने सदस्यों को कार्यालय की गतिविधियों से अवगत कराया और तिब्बत की वर्तमान स्थिति पर संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने उन्हें ब्रसेल्स में आगामी अंतरराष्ट्रीय तिब्बत समर्थक समूह सम्मेलन के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने वर्ष २०२४ की कार्ययोजना और जापान में तिब्बत गांव बसाने की अवधारणा के बारे में बात की और उनसे समर्थन का अनुरोध किया।

बैठक में समर्थक समूहों के प्रतिनिधियों ने अपना परिचय दिया और वर्ष के दौरान की गई गतिविधियों पर बात की। इस बैठक में नौ प्रमुख समर्थक समूहों और उनके सदस्यों ने भाग लिया और तिब्बत से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की।

सेव तिब्बत नेटवर्क के अध्यक्ष माकिनो सेशु ने प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया और उनसे अन्यायपूर्ण तानाशाही चीनी कम्युनिस्ट शासन के तहत पीड़ित लोगों के लिए स्वतंत्रता और न्याय का समर्थन करने वाले अपने अच्छे कार्यों को जारी रखने के प्रति प्रतिबद्धता का अनुरोध किया।

◆ तिब्बती पुनर्वास परियोजना के प्रणेता कांग्रेसमैन बार्नी फ्रैंक लोसार उत्सव में सम्मानित

tibet.net, १३ फरवरी, २०२४

मैसाचुसेट्स। तिब्बती नववर्ष या २१५१ वुड ड्रैगन वर्ष पर आयोजित लोसर उत्सव समारोह में अमेरिकी संसद- कांग्रेस- के सदस्य बार्नी फ्रैंक को अमेरिका में तिब्बती शरणार्थियों के पुनर्वास में महत्वपूर्ण भूमिका के लिए मैसाचुसेट्स के क्षेत्रीय तिब्बती संघ द्वारा सम्मानित किया गया। यह आयोजन उस ऐतिहासिक प्रवास की ३२वीं वर्षगांठ को भी याद करने के लिए किया गया है, जो १९९२ में कांग्रेसमैन फ्रैंक द्वारा प्रायोजित कानून के पारित होने के बाद शुरू हुआ था। इस कानून के कारण भारत और नेपाल के १००० तिब्बती शरणार्थियों को अमेरिका में नया घर खोजने की कानूनी वैधता प्राप्त हो सकी।

१९९० के आप्रवासन अधिनियम के अंतर्गत सन्निहित, तिब्बती अमेरिकी पुनर्वास परियोजना (टीयूएसआरपी) अमेरिका में आप्रवासन नीतियों में सुधार लाने के उद्देश्य से एक व्यापक विधायी ढांचे के भीतर ऐतिहासिक पहल के रूप में सामने आई। मैसाचुसेट्स से प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य फ्रैंक ने इस प्रमुख प्रावधान को पेश करने और प्रायोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे मानवाधिकारों को आगे बढ़ाने और शरणार्थी पुनर्वास के प्रति उनके अटूट समर्पण का इजहार होता है।

इस उत्सव में तिब्बती पुनर्वास परियोजना में शामिल तिब्बतियों, शेरपाओं, स्वयंसेवकों और मेजबान परिवारों के एक जीवंत समुदाय ने भाग लिया। सभा को संबोधित करते हुए बार्नी फ्रैंक ने परियोजना की सफलता और अमेरिका में आप्रवासन के व्यापक निहितार्थों पर विचार किया। उन्होंने पुनर्वास के पारस्परिक लाभों पर भी प्रकाश डाला। इनमें उन तिब्बती शरणार्थियों के लिए लाभ हैं जो चीनी उत्पीड़न से बच गए और अमेरिका के लिए लाभ है, जिसने तिब्बती लोगों की उपस्थिति के साथ अपनी सांस्कृतिक टेपेस्ट्री को समृद्ध किया। सांसद फ्रैंक ने अपने भाषण में अमेरिकी समाज के आधार के रूप में विविधता और आप्रवासन के महत्व को भी रेखांकित किया, जो पूर्वी यूरोप से उनके अपने परिवार के प्रवासन के इतिहास से समानताएं दर्शाता है। उन्होंने उनके प्रयासों को मान्यता देने के लिए आभार व्यक्त किया और अच्छे कार्यों के स्थायी प्रभाव को रेखांकित करते हुए ऐसे मानवीय प्रयासों के स्थायी लाभों के बारे में बात की।

उत्तर और दक्षिण अमेरिका का प्रतिनिधित्व करने वाले निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य थोंडुप छेरिंग ने कानूनी तौर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए बार्नी फ्रैंक, एडवर्ड बेडनार के अनुकरणीय नेतृत्व और उन स्वयंसेवकों और मेजबान परिवारों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की, जिनकी अटूट करुणा और सहायता उन्हें मिली। उन्होंने कहा कि तिब्बती- अमेरिकी पुनर्वास परियोजना (टीयूएसआरपी) सफल होगी। उन्होंने टीयूएसआरपी की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में सराहना की। साथ ही इसके मिशन पर जोर दिया कि पुनर्वासित तिब्बतियों को अमेरिका के भीतर 'तिब्बत के राजदूत' के तौर पर सेवा करने का मौका दिया जाए, जिससे तिब्बती संस्कृति, भाषा और पहचान का संरक्षण और प्रचार सुनिश्चित हो सके।

थोंड्रुप ने कब्जे वाले तिब्बत में चल रही चुनौतियों को भी रेखांकित किया। फ्रीडम हाउस रिपोर्ट के खतरनाक निष्कर्षों को रेखांकित किया, जिसने लगातार दूसरे वर्ष तिब्बत को विश्व स्तर पर सबसे कम आजादी वाले क्षेत्र के रूप में पहचाना है। उन्होंने चीनी औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों में जबरन तिब्बती बच्चों को भर्ती करने वाले गंभीर सांस्कृतिक और भाषाई संहार पर प्रकाश डाला और तिब्बत को 'जिजांग' नाम देकर तिब्बती पहचान को कम करने के चीनी सरकार के सुनियोजित प्रयासों की निंदा की।

मैसाचुसेट्स के क्षेत्रीय तिब्बती संघ के अध्यक्ष सुल्ट्रिम कुनसांग ने सांसद बार्नी फ्रैंक और उन सभी लोगों के प्रति गहरा आभार व्यक्त किया, जिन्होंने तिब्बती समुदाय के लंबे समय के सपने को साकार करते हुए अमेरिका में १००० तिब्बतियों के पुनर्वास में योगदान दिया। उन्होंने अमेरिका में तिब्बती प्रवासियों के बसने का श्रेय परम पावन दलाई लामा के दूरदर्शी मार्गदर्शन, अपनी मातृभूमि और निर्वासन दोनों में तिब्बतियों की दृढ़ प्रतिबद्धता और अमेरिकी सरकार, नेताओं और दयालु व्यक्तियों के लगातार समर्थन को दिया।

सुल्ट्रिम ने परम पावन १४वें दलाई लामा के अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए सामूहिक तिब्बती आकांक्षा को दोहराया, उनके सपनों की प्राप्ति और अहिंसक तिब्बती आंदोलन की सफलता की आशा व्यक्त की। उनकी टिप्पणियां तिब्बती लोगों के स्थायी लचीलेपन और न्याय, शांति और स्वतंत्रता के लिए उनकी निरंतर खोज की मार्मिक याद दिलाती हैं।

इस परियोजना के माध्यम से एमहर्स्ट क्षेत्र में पुनर्स्थापित होने वाले पहले तिब्बतियों में से एक यूटेन ग्याछो ने शरणार्थी होने से लेकर तिब्बती-अमेरिकी प्रवासी का गौरव पाने तक की अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में बात की। उनकी कहानी तिब्बती समुदाय की आशाओं और सपनों का उदाहरण है, जिनकी संख्या अमेरिका में ३०,००० से अधिक हो गई है। यूटेन ने कहानी में अमेरिकी समाज और वैश्विक समुदाय के निर्माण में योगदान करते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने के लिए समुदाय की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला।

कांग्रेसमैन बार्नी फ्रैंक को कृतज्ञता के गहन भाव से एमहर्स्ट क्षेत्र में तिब्बती पुनर्वास परियोजना के समर्पित स्वयंसेवकों और मेजबान परिवारों के साथ केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से मान्यता प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। समुदाय के सदस्यों ने खड़े होकर जब उनका स्वागत किया तो पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। यह अमेरिका में तिब्बती प्रवासी की सफलता की कहानी बुनने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को मार्मिक सलामी थी। इस घटना ने अमेरिका में तिब्बती पुनर्वास के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्थापित किया। यह परम पावन दलाई लामा के दूरदर्शी नेतृत्व, अमेरिकी कांग्रेस के दृढ़ समर्थन और कांग्रेसी बार्नी फ्रैंक और अमेरिका के कई व्यक्तियों की अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। साथ में उन्होंने तिब्बती लोगों की लचीली भावना को मूर्त रूप दिया और इस महत्वाकांक्षी सपने को एक जीवंत वास्तविकता में बदलने के प्रति एकजुटता प्रकट की।

◆ कैलाश शिखर के पास चीन नया बॉर्डर गेम खेल रहा!

deccanchronicle.com/क्लाउड अर्पी, २३ फरवरी, २०२४

पश्चिमी तिब्बत की अपनी एक समृद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। विशेष रूप से भारत, नेपाल और तिब्बत की सीमाओं के संगम के निकट कैलाश शिखर की। यहां हम बात कर रहे हैं यहां से कुछ किलोमीटर दूर स्थित पुरंग/ तकलाकोट और टोयो नामक स्थान की, जो जनरल ज़ोरावर सिंह के डोगरा सैनिकों और तिब्बती सैनिकों के बीच हुए ऐतिहासिक युद्ध के लिए दर्ज हो गया है। हाल ही में पश्चिमी तिब्बत (जिसे न्गारी के नाम से जाना जाता है) पर विजय प्राप्त करने वाले डोगरा सैनिक दिसंबर १८४१ में तिब्बतियों से हार गए थे। साथ ही यहां की सर्दियों से भी वे मात खा गए।

महान तिब्बती इतिहासकार छेपोन शाकबपा ने तकलाकोट/टोयो की लड़ाई का वर्णन इस प्रकार किया, 'तिब्बती सरकार ने तुरंत कैबिनेट मंत्री पेलहुन के नेतृत्व में दापोन (जनरल) शेड्रा वांगचुक ग्यालपो और छांग (मध्य तिब्बत) मिलिशिया को कैबिनेट मंत्री पेल्हुन के नेतृत्व में रवाना किया। जब वे न्गारी पहुंचे तो विदेशी सेना (डोगरा) की एक रेजिमेंट रुतोक (पैंगोंग-छो के पास) में, दूसरी रेजिमेंट ट्रैशिगांग (लद्दाख सीमा पर डेमचोक के पास) में और तीसरी रूपशो (लद्दाख) में मोर्चा संभाले हुए थी। प्रत्येक (डोगरा) इकाई का सामना करने के लिए तिब्बती सैनिकों को गुप्त तैयारी थी। तकलाखार (तकलाकोट) कैसल (वास्तव में टोयो में) में तैनात जोरावर सिंह और सबसे अनुभवी (डोगरा) सैनिकों का मुकाबला तिब्बती सैनिकों से हुआ। ग्यारहवें महीने (दिसंबर १८४१) के वर्ष के सबसे ठंडे मौसम के दौरान तिब्बती सैनिकों ने सभी दिशाओं से एक साथ हमला किया।

शाकबपा के अनुसार, ज़ोरावर सिंह और उनके सैनिकों का भाग्य कुंद हो गया था, 'लड़ाई शुरू होने के तीन दिन बाद भारी बर्फबारी हुई। इस प्रकार, तकलाकोट में मौजूद सिख सैनिक जहां के तहां ठहर गए। अपनी कठिनाइयों और ठंड से कांपते हुए सिख सैनिकों पर तिब्बतियों द्वारा भयानक हमला किया गया। आमने-सामने की सीधी लड़ाई शुरू हो गई। जब अपने घोड़े पर सवार जोरावर सिंह आगे-पीछे दौड़ रहे थे, उस समय उन्हें मिकमार नामक एक यासोर सैनिक ने पहचान लिया। उसने उन पर भाला फेंका और जोरावर सिंह घोड़े से गिर गए। अपने घोड़े से छलांग लगाकर मिकमार ने सिंह का सिर काट दिया और उसे तिब्बती शिविर में ले आया। इसे सिख (डोगरा) सैनिकों ने देखा और वे जहां मौका मिला, भाग खड़े हुए।'

कुछ महीने बाद महाराजा गुलाब सिंह ने लद्दाख पर आक्रमण करने की कोशिश कर रही तिब्बती सेना को कुचल दिया। दापोन ज़ुरखांग और दापोन पेल्ज़ी को पकड़ लिया गया और लेह ले जाया गया। वहां पर

डोगरा और तिब्बतियों के बीच एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए गए। इससे एक बार फिर लद्दाख और तिब्बत के बीच पारंपरिक सीमा निश्चित हुई। हाल ही में अलग-अलग कारणों से चर्चा में आए टोयो में जोरावर सिंह की कब्र आज भी मौजूद है।

चीनी मीडिया के एक लेख में टोयो में एक नवनिर्मित गांव का उल्लेख किया गया है, 'चीन ग्रामीण जीवन के माहौल में सुधार को बढ़ावा दे रहा है, हरियाली (क्षेत्र), सौंदर्यीकरण और (जल) शुद्धिकरण पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। टोयो में परिवर्तन एक सुंदर और रहने योग्य ग्रामीण इलाके के निर्माण के लिए न्गारी क्षेत्र के प्रयासों की एक ठोस अभिव्यक्ति है।'

कम्युनिस्ट पार्टी के एक स्थानीय कैडर बताते हैं कि पिछले तीन वर्षों में अकेले पश्चिमी तिब्बत में रहने योग्य, औद्योगीकृत और सुंदर गांव बसाने के लिए कुल ३१ परियोजनाएं लागू की गई हैं। उनके शब्दजाल के अनुसार इसे यूं कहा जाएगा- 'साफ सुथरे गांवों के सिद्धांतों के अनुरूप सुंदर आरामदायक गांव, खुशहाल और रहने योग्य गांव।' लेकिन असली सवाल ज्यो का त्यों है कि टोयो में एक नया गांव क्यों?

न्यूज़वीक कहता है, 'ऐसा प्रतीत होता है कि चीन ने देश के दक्षिण-पश्चिमी सीमा क्षेत्रों में एक बांध का निर्माण कर लिया है। यह एक ऐसी परियोजना है, जिसका दूरगामी रणनीतिक प्रभाव उसके दक्षिणी पड़ोसियों- भारत और नेपाल पर हो सकता है।' मापचा सांगपो (या पीकॉक नदी, जिसे भारत में घाघरा और सरयू तथा नेपाल में करनाली कहा जाता है) पर निर्मित यह बांध निचले इलाके की आबादी के लिए ताजे पानी की आपूर्ति का बारहमासी स्रोत है।

अजीब बात है कि भारतीय सीमा के करीब निर्मित इस जलविद्युत संयंत्र के बारे में पहले किसी भी प्रकाशित चीनी योजना में कोई उल्लेख नहीं किया गया है। हालांकि सैटेलाइट इमेजरी में केवल बीच की नदी पर बांध दिखाई पड़ता है। इसमें कोई बड़ा जलाशय नहीं है। निचले इलाके में बसे भारत को चिंतित होना चाहिए। लेकिन बात इसके आगे और भी बहुत कुछ है।

जलविद्युत संयंत्र और 'मॉडल' गांव से कुछ किलोमीटर उत्तर में एक नया हवाई अड्डा बन रहा है। जून २०१८ में चीन के नागरिक उड्डयन प्रशासन ने घोषणा की थी कि तिब्बत में जल्द ही तीन नए हवाई अड्डे बनेंगे। चीनी भाषा के प्रेस ने इन तीन हवाई अड्डों के स्थान के बारे में कुछ जानकारी दी थी- एक अरुणाचल प्रदेश के उत्तर में लुनछे में, दूसरा नेपाल के साथ सीमा चौकी के उत्तर में और आखिरी पुरंग में बनना था।

चीनी वेबसाइट Seetao.com के अनुसार, 'इन तीन हवाई अड्डों का उपयोग शांतिकाल में नागरिक उपयोग, तिब्बत पठार पर सैन्य विमान प्रशिक्षण के लिए किया जा सकता है। जबकि युद्धकाल में प्रत्यक्ष सैन्य उपयोग, सैन्य अभियान के साथ बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा।' हालांकि भारत में कई लोग इस घोषणा के बारे में भूल गए हैं कि हवाई अड्डा अब सक्रिय हो चुका है। नवनिर्मित हवाई क्षेत्र के १० नवंबर, २०२३ को वीडियो चीनी सोशल मीडिया पर दिखाई दिए। इन तीन निर्माणों (मॉडल गांव, जलविद्युत स्टेशन और हवाई अड्डे) को एक के रूप में देखा जाना चाहिए। निस्संदेह ये सभी दोहरे (नागरिक और सैन्य) उपयोग के लिए हैं।

एक और घटना पर ध्यान देने की जरूरत है, वह यह है कि भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए कैलाश यात्रा का बंद हो गई है। ६६३८ मीटर ऊंचे हीरे के आकार के पर्वत को भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है और यह जैन, बौद्ध और बॉन धर्मों में सबसे पवित्र स्थानों में से एक है। सदियों से भारत से तीर्थयात्री यहां दर्शन करने आते हैं। १९९० के दशक से भारत के यात्री पिथौरागढ़ जिले में लिपुलेख दर्रे से तिब्बत में प्रवेश कर सकते थे और बाद में सिक्किम में नाथू-ला से तिब्बत में प्रवेश कर सकते थे। २०१७ में डोकलाम घटना के बाद भारतीय यात्रियों को अब इन मार्गों का उपयोग करने की अनुमति खत्म हो गई है।

चूंकि बीजिंग ने कैलाश शिखर के हवाई दर्शन की अनुमति देने के काठमांडू के अनुरोध को नजरअंदाज कर दिया, इसलिए नेपाली टूर ऑपरेटरों ने यात्रियों को एक विकल्प देने का फैसला किया और बड़ी संख्या में भक्तों ने चार्टर्ड हेलीकॉप्टरों द्वारा सिमिकोट से पुरंग तक नेपाल मार्ग का उपयोग करना शुरू कर दिया। दुर्भाग्य से यह योजना बाद में कोविड-१९ महामारी के कारण बंद कर दी गई।

चीनी अधिकारियों ने २०२२ में नेपालियों के लिए योजना फिर से खोलने के बाद भी भारतीय यात्रियों को पुरंग जाने की अनुमति नहीं दी। हालांकि पिछले साल अकेले, नेपाली टूर ऑपरेटरों को पवित्र तीर्थयात्रा के लिए भारतीय तीर्थयात्रियों से ५०,००० से अधिक बुकिंग प्राप्त हुईं।

काठमांडू पोस्ट के अनुसार, एक नया विकल्प खोजा गया है। एक उड़ान नेपाली क्षेत्र में हो सकती है और पवित्र शिखर का दूर से दर्शन करा सकती है। पिछले सप्ताह एक विज्ञप्ति में बताया गया कि श्री एयरलाइंस ने पवित्र शिखर की अपनी तरह की पहली हवाई तीर्थ यात्रा संचालित की है। यह विकल्प चीनी वीज़ा के बिना भारतीय तीर्थयात्रियों के सपने को साकार कर रहा हैं। यह स्पष्ट है कि चीन नहीं चाहता कि भारतीय पवित्र शिखर के वास्तविक दर्शन करें या उस स्थान के करीब भी जाएं जहां ज़ोरावर सिंह को दफनाया गया है। क्षेत्र के नवीनतम घटनाक्रम इसकी गवाही दे रहे हैं।

क्लाउड अर्पी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर द हिमालयन स्टडीज, शिव नादर इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस (दिल्ली) में प्रतिष्ठित फेलो हैं और भारत- तिब्बत और भारत-फ्रांस संबंधों पर लिखते रहते हैं।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tenzin Jorden
Acting Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

तेनज़िन जॉर्डन
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

February, 2024, Years: 45 Issue: 02 Regd No. : RNI 34636-79

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री से भेंट करते तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल।

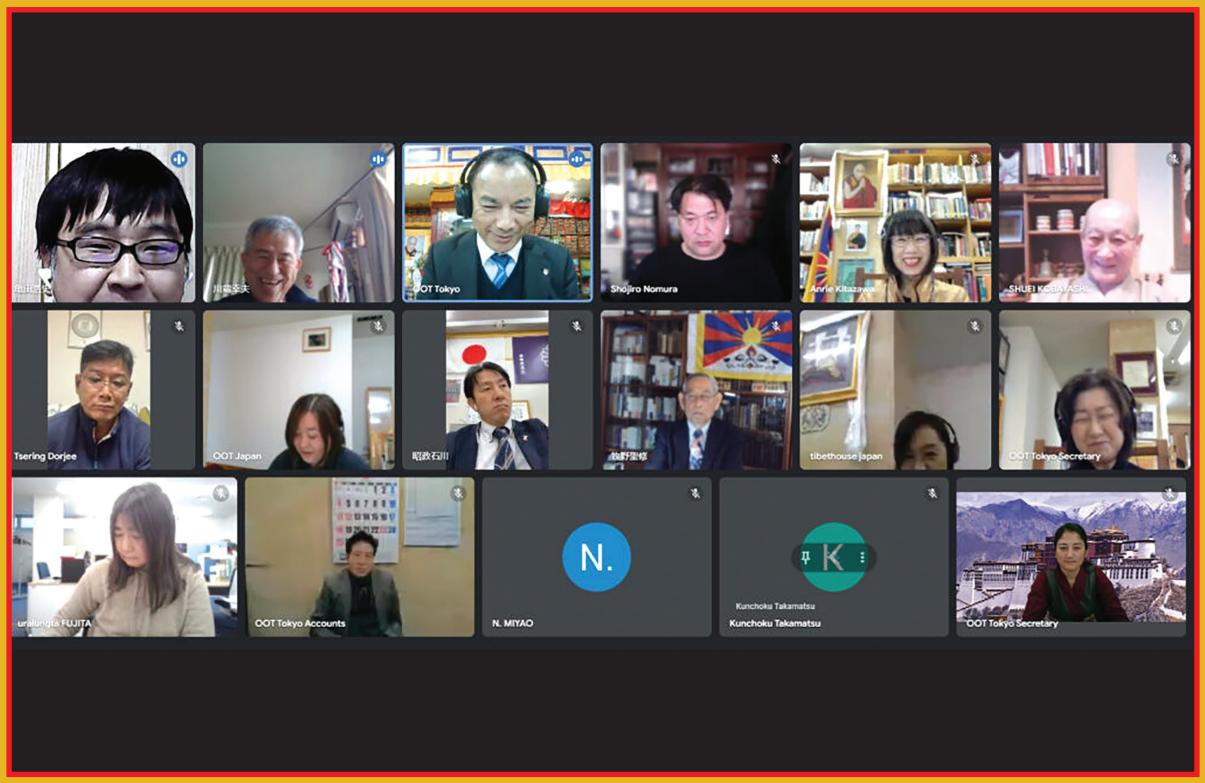

जापान में तिब्बत समर्थक समूहों की वार्षिक बैठक।